UGC Approved CARE Listed Jounal

ISSN : 2321-6131

जुलाई-दिसम्बर, 2022

समवेत

विशेषांक :
नई शिक्षा नीति-2020

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

ISSN : 2321-6131
वर्ष : 10 अंक : 20/1 जुलाई-दिसम्बर, 2022

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त (CARE) शोध पत्रिका
UGC Approved CARE Listed Journal

विशेषांक : नई शिक्षा नीति-2020

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

अनुक्रम

नई शिक्षा नीति

1. शिक्षा स्वराज के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 — 7
   प्रो. सदानंद भोसले
2. नई शिक्षा नीति : मलयालम सहित शास्त्रीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकास — 13
   प्रो. मोहनन
3. 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका — 16
   डॉ. शिंदे नवनाथ सर्जेराव
4. नई शिक्षा नीति 2020 : भाषिक परिदृश्य — 22
   डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले
5. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 और हिंदी पत्रकारिता — 28
   अशोक मुरलीधर घोरपडे
6. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का महत्त्व — 35
   प्रो. बबन चौरे
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं का भविष्य — 39
   प्रो. समद जमादार
8. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और भारतीय भाषाएँ — 43
   डॉ. संजय मन्साराम महेर
9. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय भाषाएँ — 47
   डॉ. स्मृति चौधरी
10. नई शिक्षा नीति और भारतीय भाषाओं की स्थिति — 51
   डॉ. संतोष तानाजी धोत्रे
11. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : भारतीय भाषाएँ एवं अनुवाद — 58
   डॉ. बालासाहेब सोनवणे

अनुवाद

12. मशीनी अनुवाद और भारतीय भाषाएँ — 63
   डॉ. जयराम गाडेकर
13. भाषा समृद्धि में अनुवाद की भूमिका — 74
   श्रीमती शिंदे अनुराधा कल्याण
14. भारतीय भाषा हिंदी और अनुवाद — 78
   डॉ. ऐनूर शब्बीर शेख
15. साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद — 82
   अर्जुन रावसाहेब मोरे

जनसंचार माध्यम

16. **जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा** 87
ससे केशव काकासाहेब

17. **जनसंचार माध्यम एवं भाषाएँ** 92
डॉ. रवींद्र निरगुडे

18. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और भारतीय भाषा हिंदी** 97
डॉ. अपर्णा पाटील

19. **पत्रकारिता और भारतीय भाषाएँ** 102
डॉ. पी. हरिराम प्रसाद

20. **दक्षिण भारतीय सिनेमा, डबिंग और हिंदी** 105
डॉ. दादासाहेब एन. डांगे

21. **इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और रोजगार के अवसर** 113
डॉ. बेबी राघू कोलते

22. **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिंदी भाषा का महत्त्व** 119
डॉ. संजय भाऊसाहेब दवंगे

23. **हिंदी पत्रकारिता की वेबदुनिया** 122
डॉ. राम बडे

24. **सामाजिक विकास में आकाशवाणी और भारतीय भाषाओं का योगदान** 128
डॉ. जितेंद्र पितांबर पाटिल

25. **भारतीय भाषाएँ और पत्रकारिता** 133
डॉ. प्रवीण तुलशिराम तुपे

हिन्दी भाषा, साहित्य और शिक्षा

26. **साठोत्तरी भारतीय रंगचेतना और सुरेंद्र वर्मा** 141
दशरथ काशिनाथ खेमनर एवं डॉ. विनायक खरटमल

27. **हिंदी नाटक और मोहन राकेश (नाट्य शिल्प के संदर्भ में)** 147
प्रो. उत्तम ओंकार येवले

28. **भारतीय मिथक परंपराओं की पुनर्व्याख्या 'संजीवनी' खंडकाव्य** 154
डॉ. सुजाता राजेंद्र लामखडे

29. **हिंदीतर भाषियों हेतु हिंदी भाषा शिक्षण** 161
डॉ. दीपक जाधव

30. **अधुनातन आयामों में हिंदी** 167
डॉ. नवीन नंदवाना

जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा

ससे केशव काकासाहेब*

आधुनिक युग संचार का युग है। संचार साधनों के तकनीकी विकास का श्रेय वैज्ञानिक प्रगति को है। संचार एक गतिशील प्रक्रिया है जो संबंधों पर आधारित है। यह संबंध जोड़ने का बड़ा हथियार है। एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक देश को दूसरे देश से जोड़ना संचार का काम है। अतः संचार सामाजिक पारस्परिक क्रिया की प्रक्रिया है। संचार का सामान्य अर्थ लोगों का आपस में विचार, ज्ञान तथा भावनाओं का संकेतों द्वारा आदान-प्रदान है।

''जनसंचार में संचार शब्द अंग्रेजी के Communication का हिंदी पर्यायवाची शब्द है। यह शब्द लैटिन भाषा के Communis से लिया गया है।''[1] जनसंचार में संचार शब्द संस्कृत के चर् धातु से निकला है। जिसका अर्थ चलना या संचरण करना है। संचार के साथ जन शब्द जुड़ने से जनसंचार शब्द का निर्माण हुआ। जन का अर्थ जन समूह तथा जनसमुदाय से है। मनुष्य की दृष्टि में जन का अर्थ है- बड़ी संख्या में एकत्र लोग। यदि जन शब्द को संचार का विशेषण माने तो इसका यह अर्थ निकलता है कि एक ही समय में बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों को प्रभावित करना। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जब संचार की प्रक्रिया या संदेशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर होता है, तो वह जनसंचार कहा जाता है।

जोसेफ डिनिटी के अनुसार- ''जनसंचार बहुत से व्यक्ति में एक मशीन के माध्यम से सूचनाओं विचारों और दृष्टिकोणों को रूपांतरित करने की प्रक्रिया है। अतः

---

* सहायक प्राध्यापक, प्रवरा मेडिकल ट्रस्ट, आर्टस, कॉमर्स-सायन्स कॉलेज, शेवगांव (महाराष्ट्र) 414502

स्पष्ट है कि जनसंचार का सरल अर्थ है सूचना (Information) को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना है।''[12] इसमें जनसंचार के माध्यमों द्वारा जनमत का निर्माण करना सहज संभाव्य है। जनसंचार की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ होती हैं। जनसंचार के माध्यम से जनसामान्य की प्रतिक्रियाओं का पता चलता है। जनसंचार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से हो सकता है। जनसंचार का माध्यम लिखित और मौखिक दोनों प्रकार का होता है। जनसंचार माध्यमों से कोई भी संदेश तीव्रतम गति से लोगों तक पहुँचाया जा सकता है।

जनसंचार से स्पष्ट हुआ कि विचारों का आदान–प्रदान, सूचना या Information को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना लेकिन इस सभी प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता होती है। इन संचार माध्यमों में समाचार पत्र, टेलीविजन, पुस्तकें, मैगजीन, रेडियो, मोबाइल, फिल्म आदि माध्यमों की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह माध्यम अलग–अलग होने के बावजूद भी सभी माध्यमों का उद्देश्य तथा लक्ष्य मात्र एक ही है। इन सभी माध्यमों के साथ-साथ जनसंचार के लिए एक महत्त्वपूर्ण बात की आवश्यकता है होती है वह है 'भाषा'। उसके बिना विचारों, भावों, ज्ञान, संस्कृति आदि का आदान–प्रदान संभव ही नहीं। भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त साधन है। भारत बहुभाषी राष्ट्र होने के कारण भारत में विभिन्न भाषाओं में जनसंचार प्रक्रिया पूरी होती है लेकिन उसमें हिंदी भाषा का महत्त्व है। भारत के अधिक से अधिक लोग हिंदी भाषा को बोलते और समझते हैं। वही भाषा 'जनसंचार' के लिए सुविधाजनक होती है, जो उस राष्ट्र के लोग पढ़, लिख, बोल और समझ सकते हैं। भारत में जनसंचार की महत्त्वपूर्ण भाषा के रुप हिंदी अपनी भूमिका अदा कर रही है। जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत समाचार पत्र, मैगजीन, पुस्तकें, रेडियो, टेलिविजन, सिनेमा, विज्ञापन, इंटरनेट, मोबाइल आदि का समावेश है।

समाचार पत्र

सन् 1450 में जॉन गुटेनबर्ग के द्वारा मुद्रण का अविष्कार हुआ। इसके बाद संचार वरदान सिद्ध हुआ। विकसित देशों में समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में अठारहवीं शताब्दी के अंत में सन् 1780 में अखबार की शुरुआत हुई। जेम्स अगस्टम हिकी ने 1780 में 'बंगाल गजट' निकालकर अखबार का आरंभ किया। यह गुजराती भाषा में प्रकाशित सबसे पुराना अखबार है। इसके पश्चात् सन् 1826 में 'उदंत मार्तंड' निकला। यह हिंदी भाषा का पहला समाचार पत्र है। इसका प्रकाशन 30 मई, 1826 ई. में कलकत्ता से एक साप्ताहिक पत्र के रूप में हुआ था। इसके पश्चात् 'जनसत्ता', 'नवभारत टाइम्स', 'हिंदुस्तान', 'पंजाब केसरी', 'विश्वमित्र', 'वीर अर्जुन',

'राष्ट्रीय सहारा', 'अमर उजाला', 'दैनिक जागरण', 'अमृत प्रभात', 'राजस्थान पत्रिका', 'दैनिक भास्कर' आदि हिंदी समाचार पत्रों की शुरुआत हुई। ये सभी समाचार पत्र हिंदी भाषा में जनसंचार माध्यम के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

मैगजीन

यह भी जनसंचार का महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ है। मैगजीन में एक विशेष समय में नई जानकारियों का समावेश होता है। मैगजीन की हर नई प्रति में नई अलग-सी जानकारियाँ नए विषय और मनोरंजन होता है। मैगजीन को ज्ञान का भंडार भी कहा जाता है। आज विश्व के हर प्रांत में दैनिक साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अधिक मात्रा में हो रहा है। आधुनिक तकनीकी के कारण रोचक ले आऊट, सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा और श्रेष्ठ मुद्रण के कारण मैगजीन के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ गया है। हर मैगजीन अपने निश्चित पाठकों को आकर्षित करती है। पाठक अपने पसंद के अनुसार मैगजीन का चयन करते हैं। प्रमुख रुप से मैगजीन चार प्रकार के होते हैं- 1. व्यावसायिक मैगजीन 2. व्यापार और तकनीकी मैगजीन 3. उपभोक्ता मैगजीन 4. शैक्षिक और शोधकर्ता मैगजीन।

मैगजीन छपाई का कार्य मीडिया ग्रुप, प्रकाशन संस्था, समाचार पत्रों, छोटी संस्थाओं, व्यापारी संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और धार्मिक संगठनों द्वारा किया जाता है। हिंदी में 'हंस', 'पाखी', 'बया', 'पहल', 'अंतिम जन', 'लमही', 'पक्षधर', 'आलोचना', 'सरिता', 'इंडिया टुडे', 'वनिता' जैसी मैगजीन जनसंचार माध्यम के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रही हैं।

रेडियो

आज के दौर में जनसंचार के कई प्रचलित माध्यम हैं। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण माध्यम रेडियो है। ''रेडियो एक ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा आवाज को विद्युत तरंगों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक बड़ी आसानी से भेजा जा सकता है।''[13] जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के अतिरिक्त रेडियो की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रारंभ में मनोरंजन एवं सूचना प्राप्ति के लिए साधन सीमित थे। ऐसे समय में रेडियो के द्वारा क्रांति उत्पन्न हुई। रेडियो का प्रारंभ अमेरिका में हुआ था। उसके पश्चात् रेडियो भारत में आया। रेडियो ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की बागडोर ब्रिटिश शासन के हाथों में होते हुए भी रेडियो सेवा लगातार शुरु रही। रेडियो सेवा के कारण क्रांतिकारी हमेशा सतर्क रहे क्योंकि रेडियो माध्यम से अंग्रेजी हुकुमत की सभी नितियाँ समाचार प्रसारित होते रहते

समन्वेत [ISSN : 2321-6131]

थे। टेलीविजन के पश्चात् रेडियो का महत्त्व कम हुआ लेकिन एफ.एम. रेडियो जैसे नए आविष्कारों के कारण रेडियो का महत्त्व फिर से बढ़ गया। आज के युग मे हिंदी रेडियो नाटक, हिंदी समाचार, हिंदी विज्ञापन, हिंदी गीत रेडियो के माध्यम से प्रसारित हो रहे हैं। मतलब यह है कि इस जनसंचार के माध्यम में हिंदी भाषा का प्रयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है।

टेलीविजन

''मानव समय-समय पर अपनी अभिव्यक्ति विद्वत्ता, ज्ञान की वृद्धि के लिए नए-नए संसाधनों की खोज करता रहता है। उसमें टेलीविजन एक महत्त्वपूर्ण खोज है। टेलीविजन संचार के लिए दृश्य माध्यम के रूप में विशिष्ट और सर्वव्यापी कहा जा सकता है।''[14] भारत में टेलीविजन की शुरुआत मनोरंजन और ज्ञान हेतु से हुई। जनसंचार साधनों में यह सबसे प्रभावी जनसंचार माध्यम सिद्ध हुआ है। टेलीविजन में हिंदी भाषा का प्रारंभ 1959 से हुआ। भारत में टेलीविजन पर 7 जुलाई, 1984 में हिंदी में धारावाहिक पहला प्रसारण 'हम लोग' नाम से हुआ। नासा उपग्रह पर आधारित शिक्षा और एवं ग्रामीण विकास से संबंधित कार्यक्रम भी हिंदी भाषा में प्रसारित हुए। सन् 1984 में भारत ने जीता विश्वकप का सीधा प्रसारण हिंदी भाषा में हुआ। इससे हिंदी भाषा ने यह बात सिद्ध कर दी की मनोरंजन और उसके सीधे प्रसारण के लिए हिंदी भाषा की भूमिका अहम है। आज टेलीविजन के विभिन्न चैनलों द्वारा न्यूज, फिल्में, नाटक, विज्ञान, हिंदी भाषा में प्रसारित हो रहे हैं। स्पष्ट है कि टेलीविजन जैसे जनसंचार माध्यम में हिंदी भाषा का महत्त्व अनन्य साधारण है और वह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

कंप्यूटर

कंप्यूटर यह भी जनसंचार का एक सबसे सशक्त माध्यम है। भारत में कंप्यूटर का आगमन हुआ और हिंदी भाषा तेजी से बढ़ने लगी भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी का विकास किया है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार मंत्रायल ने www.ildc.gov.in वेबसाइट जारी की है। ई-वेबसाईट पर भारतीय भाषाओं के विकास कार्यक्रमों की जानकारी दी गई है। इन कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयर इंटरनेट के माध्यम से मुफ्त मे डाऊनलोड किए जा सकते हैं।

कॉरपोरा (भारतीय भाषाओं का शब्द संसार) सी.डेक. पुणे द्वारा विकसित इस सॉफ्टवेयर का आकारमान 176 एम.बी. है। इसमें हिंदी के सभी अपरिष्कृत शब्दों को पी.सी.आई.एम.सी.आई.आई. में संगृहीत किया गया है। आज के युग मे कंप्यूटर के

माध्यम से विविध प्रकार की जानकारी विभिन्न भाषा-भाषियों लोगों तक पहुँचाई जाती है। उसमें हिंदी भाषा भी एक महत्त्वपूर्ण भाषा है जिसके माध्यम, शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, ज्ञान का भंडार लोगों तक पहुँचाने का कार्य कंप्यूटर के द्वारा किया जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा बहुत ही निकट संबंध है। जनसंचार माध्यम के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग कोई नई बात नहीं है, परंतु स्वतंत्रता के पश्चात् हिंदी भाषा का प्रयोग राजभाषा तथा प्रयोजनमूलक हिंदी के रूप में निरंतर विकासमान है। सरकार एवं व्यापारी वर्ग ने सदियों से जन उपयोगी सूचनाएँ एवं खबरें देने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया है। आधुनिक युग के प्रमुख जनसंचार माध्यमों में जैसे आकाशवाणी दूरदर्शन, फिल्में, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ एवं इंटरनेट हैं। इन सभी संचार माध्यमों में हिंदी ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। हिंदी को विश्वभाषा बनाने में संचार के विविध माध्यमों में इंटरनेट की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. दंगल झाल्टे : प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2015, पृष्ठ 208
2. वही, पृष्ठ 209
3. डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह : प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 228
4. वही, पृष्ठ 229